कार्यकर्ता विकास वर्ग

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 24 - 30 May 2026

संस्कारित कार्यकर्ता सशक्त राष्ट्र

पितांबरी®
देवभक्ती®
अगरबत्ती

अनुभव करे भक्ति की शक्ति!

भक्ति की खुशबू से महके उपासना का हर पल!

Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804,
North: 7011012599, South: 9886553105, East: 7752023380,
9867102999, CRM: 022 - 67035564/5699

www.pitambari.com
Toll Free: 18001031299
CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

◆ व्यक्तिगत निखार से राष्ट्र-निर्माण तक	डॉ. लोकेंद्र सिंह	04
◆ शौर्य प्रशिक्षण वर्ग : व्यक्तित्व निर्माण और राष्ट्रसेवा का माध्यम	मुकेश गुप्ता	06
◆ सामाजिक समरसता के उद्घोषक बने हिंदू सम्मेलन	डॉ. प्रवीण दाताराम गुगनानी	07
◆ बदलाव की अब नई पहचान	राघव कुमार झा	10
◆ यूरोप दौरे से बढ़ती आर्थिक साझेदारी	रंजीत कुमार	12
◆ जेब से विकास दर तक	सतीश सिंह	15
◆ प्रतिभा के विरुद्ध षड्यंत्र	अलकेश चतुर्वेदी	17
◆ उपलब्धियां, चुनौतियां व सोशल मीडिया की अराजकता	आशीष कुमार 'अंशु'	19
◆ कमियों से घबराएं नहीं, स्वीकारें	रचना प्रियदर्शनी	21
◆ सूरज के चढ़ते तेवर	संकलन	23
◆ आखिरी सवाल का जवाब	अतुल गंगवार	24
◆ धरोहरों में टटोलते भविष्य	संकलन	26
◆ खोज	संकलन	27
◆ समाचार	-	29

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

संघ शिक्षा वर्ग

संघ शिक्षा वर्ग और समर कैम्प की तुलना करते हैं तो दोनों में बहुत अंतर होता है। संघ शिक्षा वर्ग की दिनचर्या संयम और तपस्या पर आधारित होती है, वहीं समर कैम्प में आरामदायक कमरे, पसंदीदा भोजन और व्यक्तिगत कौशल आदि का पूरा ध्यान रखा जाता है।

डॉ. लोकेंद्र सिंह

व्यक्तिगत निखार से राष्ट्र-निर्माण तक

व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में 'समर कैम्प' हमारे जीवन का हिस्सा बन गए हैं। गर्मी की छुट्टियां लगते ही युवा अपने व्यक्तित्व को निखारने, नए कौशल सीखने और समय का सदुपयोग करने के लिए अपनी अभिरुचि के अनुसार 'समर कैम्प' में जाते हैं। नि:संदेह ये समर कैम्प युवाओं को बहुत कुछ सिखाते हैं। इसलिए रचनाधर्मी और उत्साही युवाओं के बीच समर कैम्प के प्रति आकर्षण बढ़ा है। वहीं जब हम समर कैम्प की तुलना संघ शिक्षा वर्ग से करते हैं, तब स्वयंसेवकों के उत्साह को देखकर सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इन वर्गों में न केवल व्यक्तित्व का विकास होता है अपितु राष्ट्र साधना के लिए भी उनका मन तैयार होता है। भारत मां की सेवा का जो संकल्प स्वयंसेवकों ने धारण किया है, उसको निभाने का प्रशिक्षण भी इन वर्गों में मिलता है। समर कैम्प की तुलना करते हुए संघ शिक्षा वर्गों के सम्बंध में एक बात कहनी हो तो- संघ शिक्षा वर्ग सोने पर सुहागा हैं। यहां युवा समय प्रबंधन, कार्यक्रम प्रबंधन, अनुशासन, सामंजस्य, योग, कौशल, कला, संवेदनशीलता, वक्तृत्व कला इत्यादि गुण तो सीखते ही हैं, इसके अलावा वह अपनी गौरवशाली संस्कृति से परिचित भी होते हैं तथा राष्ट्रप्रेम का भाव और गहरा होता है, नेतृत्व करने की क्षमता का विकास होता है। इस सबके साथ युवा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे यशस्वी आंदोलन को समाज में ले जाने का प्रशिक्षण भी प्राप्त करते हैं। संघ शिक्षा

वर्ग में प्रशिक्षित युवा ही आगे चलकर संघ के बड़े दायित्व का निर्वहन करने के लिए तैयार होते हैं। हां, उनके मन में एक साधारण स्वयंसेवक की भांति समर्पित भाव से संघ कार्य करने का दायित्व बोध भी गहरा होता है।

संघ शिक्षा वर्ग के लिए जाने वाले युवाओं के उत्साही समूह आपने रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड पर देखे होंगे। उनके मुख पर चमक देखकर आप भ्रमित न हों कि उनके अगले 15-20 दिन मौज-मस्ती में बीतने वाले हैं। संघ शिक्षा वर्गों की दिनचर्या अत्यंत कठिन होती है। संघ शिक्षा वर्ग किसी साधना से कम नहीं हैं। मई-जून की इस बेहिसाब गर्मी में स्वयंसेवक किसी साधक की भांति वर्ग में रहते हैं। सोने के लिए न तो पलंग मिलते हैं और न कूलर की ठंडी हवा। धरती पर अपना

बिस्तर बिछाकर स्वयंसेवक गुरुकुल के बटुकों की भांति विश्राम करते हैं, जबकि समर कैम्प अपेक्षाकृत सर्वसुविधा युक्त होते हैं। सोचिए, आज जबकि मोबाइल फोन ने हमारे जीवन में सीमा से अधिक घुसपैठ कर ली है, युवा थोड़ी देर भी फोन से दूर नहीं रह सकते हैं, उस स्थिति में संघ शिक्षा वर्ग में स्वयंसेवक मोबाइल फोन से पूरी तरह दूर रहते हैं। ब्रह्म मुहूर्त में जागरण से लेकर संघ स्थान पर शारीरिक गतिविधियां, श्रम साधना, विभिन्न विषयों पर चर्चा, संवाद और बौद्धिक वर्गों में राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर प्रबोधन से लेकर सांस्कृतिक संध्या तक एक-एक क्षण स्वयंसेवक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। समर कैम्प में भी अनुशासित दिनचर्या होती है, लेकिन उसमें थोड़ा लचीलापन रहता है, जबकि संघ शिक्षा वर्ग की दिनचर्या में एक-एक क्षण का उपयोग किया जाता है। आराम के समय में भी उत्साही स्वयंसेवक अतिरिक्त कक्षाओं में गीत, संगीत, संवाद कुशलता इत्यादि का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

समर कैम्प की तुलना में संघ शिक्षा वर्ग आसान नहीं होते हैं, लेकिन जीवन की दिशा बदलने में सबसे अधिक कारगर होते हैं। इसलिए कई प्रकार की कठिनाइयों के बाद भी स्वयंसेवक संघ शिक्षा वर्ग पूर्ण करने के लिए लालायित रहते हैं क्योंकि स्वयंसेवक यह भी जानते हैं कि हजारों स्वयंसेवकों के बीच से संघ शिक्षा वर्ग के लिए उनका चयन हुआ है यानी संघ शिक्षा वर्ग चयनित युवाओं के वर्ग हैं। यहां समर कैम्प की तरह एक निर्धारित शुल्क चुकाकर कोई भी नहीं आ सकता है। संघ शिक्षा वर्ग का हिस्सा बनने के लिए न्यूनतम अर्हता है कि युवाओं के मन में समाज के लिए कुछ करने की ललक हो, राष्ट्रप्रेम का अंकुर उनके मन में हो, अपनी संस्कृति से प्रेम हो और उसे समझने की जिज्ञासा हो।

संघ शिक्षा वर्ग 'सामूहिकता' पर केंद्रित है। इसमें यह सिखाया जाता है कि व्यक्ति का अहंकार शून्य होना चाहिए और उसे समाज/संगठन के एक हिस्से के रूप में काम करना चाहिए। स्वयंसेवक आर्थिक और सामाजिक भेदभाव भूलकर एक-दूसरे के साथ रहते हैं, खाते हैं, खेलते हैं और सीखते हैं, जबकि समर कैम्प सामान्यत: 'व्यक्ति-केंद्रित' होते हैं। इनका उद्देश्य किसी एक बच्चे या व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा को निखारना और उसे व्यक्तिगत स्तर पर सफल बनाना है। वास्तव में अपनी रचनात्मकता, शौक को पूरा करने और छुट्टियों को मनोरंजक एवं सार्थक बनाने के भाव से ही युवा समर कैम्प में शामिल होते हैं। इसके विपरीत संघ शिक्षा वर्ग का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है। इसका मूल लक्ष्य व्यक्ति के भीतर राष्ट्रप्रेम के बीज बोना है। यहां प्रशिक्षण का अंतिम लक्ष्य एक ऐसा अनुशासित कार्यकर्ता तैयार करना है, जो अपना जीवन समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित कर सके।

जब हम बाहर से संघ शिक्षा वर्ग और समर कैम्प को देखते हैं तो हमें दोनों ही आवासीय शिविर लगते हैं, जहां युवा घर से दूर रहकर कुछ नया सीखते हैं। यद्यपि दोनों का उद्देश्य अनुशासन और व्यक्तित्व निर्माण है, लेकिन यदि गहराई से देखा जाए तो दोनों के मूल लक्ष्य, प्रकृति और विचारधारा में जमीन-आसमान का अंतर है। समर कैम्प अल्पकालिक गतिविधि है, जो व्यक्ति की छुट्टियों को मजेदार बनाती है और उसे एक सफल एवं बहुमुखी व्यक्ति बनने में सहायता करती है, लेकिन संघ शिक्षा वर्ग एक वैचारिक भट्टी है, यह आजीवन चलने वाली साधना की शुरुआत है। समर कैम्प एक सफल व्यक्ति गढ़ने का प्रयास करता है, जबकि संघ शिक्षा वर्ग राष्ट्र के लिए एक सार्थक और समर्पित नागरिक गढ़ने का कार्य करता है। संघ शिक्षा वर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त करने से युवा केवल अपनी छुट्टियों का ही सदुपयोग नहीं करते अपितु वे एक सफल और सार्थक जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ जाते हैं। ●●●

शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

व्यक्तित्व निर्माण और राष्ट्रसेवा का माध्यम

वास्तव में बजरंग दल और दुर्गावाहिनी के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग केवल प्रशिक्षण शिविर नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रयोगशाला हैं। यहां से निकलने वाले प्रशिक्षार्थी अनुशासित, संस्कारित, आत्मविश्वासी और समाजहित के लिए समर्पित नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं।

आज के समय में युवाओं के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियां उपस्थित हैं। भौतिकता, स्वार्थ और पाश्चात्य प्रभाव के कारण समाज में संस्कारों और अनुशासन का क्षय दिखाई देता है। ऐसे दौर में युवाओं के भीतर राष्ट्रभक्ति, आत्मविश्वास, सेवा और संगठन की भावना जागृत करने का कार्य बजरंग दल और दुर्गावाहिनी के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग कर रहे हैं। ये प्रशिक्षण वर्ग केवल शारीरिक अभ्यास तक सीमित नहीं होते बल्कि युवाओं के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण का एक प्रभावी माध्यम बनते हैं। शौर्य प्रशिक्षण वर्गों में युवाओं को अनुशासन और संयम का महत्व सिखाया जाता है। नियमित दिनचर्या, समयपालन, समूह में कार्य करने की आदत और आत्मनियंत्रण जैसे गुण प्रशिक्षार्थियों के जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। सुबह से लेकर रात्रि तक की व्यवस्थित दिनचर्या युवाओं में जिम्मेदारी और कर्तव्यबोध का विकास करती है। यही अनुशासन आगे चलकर उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को मजबूत आधार प्रदान करता है।

इन वर्गों का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य राष्ट्र, धर्म और समाज के प्रति समर्पण का भाव जागृत करना है। प्रशिक्षण के दौरान भारत के गौरवशाली इतिहास, महापुरुषों के जीवन, वीरता की गाथाओं और सांस्कृतिक परम्पराओं का परिचय कराया जाता है। इससे युवाओं में अपने राष्ट्र और संस्कृति के प्रति गर्व उत्पन्न होता है। वे समझते हैं कि राष्ट्र केवल भूमि का टुकड़ा नहीं बल्कि हमारी सभ्यता, संस्कृति और सनातन मूल्यों का प्रतीक है।

मुकेश गुप्ता

शौर्य प्रशिक्षण वर्ग युवाओं में सेवा की भावना भी विकसित करते हैं। प्राकृतिक आपदाओं, सामाजिक संकटों और जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए तत्पर रहना इन वर्गों की विशेष पहचान है। प्रशिक्षार्थियों को सिखाया जाता है कि समाज की सेवा ही सच्चा धर्म है। इसी कारण अनेक अवसरों पर बजरंग दल और दुर्गावाहिनी के कार्यकर्ता राहत कार्यों, रक्तदान शिविरों, सामाजिक जागरण अभियानों और धार्मिक आयोजनों में सक्रिय भूमिका निभाते दिखाई देते हैं।

इन प्रशिक्षण वर्गों में आत्मरक्षा और सुरक्षा का विशेष अभ्यास कराया जाता है। युवकों और युवतियों को शारीरिक दक्षता, योग, व्यायाम तथा विभिन्न सुरक्षा कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वे विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होते हैं। विशेष रूप से दुर्गावाहिनी के प्रशिक्षण वर्ग युवतियों को आत्मरक्षा के लिए सक्षम बनाकर उनमें साहस और आत्मनिर्भरता का भाव उत्पन्न करते हैं। ऐसे वर्ग युवाओं को केवल शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से भी सशक्त बनाते हैं। यही कारण है कि ये प्रशिक्षण वर्ग समाज में जागरूक, संगठित और राष्ट्रनिष्ठ युवाशक्ति तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ●●●

सामाजिक समरसता के उद्घोषक बने हिंदू सम्मेलन

शताब्दी वर्ष

अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ ने भारत के कोने-कोने में, महानगरों से लेकर सुदूर वनांचल के गांवों तक, हजारों हिंदू सम्मेलनों का वृहद् आयोजन किया। इस आयोजनों से राष्ट्र, समाज व लोगों पर क्या प्रभाव हो रहा है, आलेख में विस्तार से चर्चा की गई है।

डॉ. प्रवीण दाताराम गुगनानी

अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर देशभर में जगह-जगह हिंदू सम्मेलन केवल किसी एक संगठन का शक्ति-प्रदर्शन नहीं थे अपितु यह भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने, सदियों से थोपी गई हीनभावना को समाप्त करने और एक समरस, सुगठित एवं शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण का महाअभियान थे। इन सम्मेलनों ने न केवल कोटि-कोटि हिंदुओं को एक सूत्र में पिरोया बल्कि भारत की सनातन काल से चली आ रही 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित भी किया। संघ शताब्दी वर्ष के इन विराट हिंदू सम्मेलनों ने भारतीय समाज और राष्ट्र-राज्य के ताने-बाने को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है।

हिंदू समाज की सबसे बड़ी निर्बलता उसके जातिगत आधार पर खंडित होना रहा है। संघ ने इन सम्मेलनों के माध्यम से सभी जाति, पंथ, सम्प्रदाय के लोगों को एक ही मंच पर आसीन करके अपनी भूमिका निभाई है। संघ का यह आद्य विमर्श रहा है कि जब समाज आंतरिक रूप से संगठित होता है तो राष्ट्र स्वतः ही बाहरी और आंतरिक चुनौतियों से निपटने के लिए सक्षम हो जाता है। इन सम्मेलनों का मुख्य संदेश था कि व्यक्ति की पहचान और स्वार्थ से ऊपर राष्ट्र का स्थान है। नागरिकों में अपने कर्तव्यों के प्रति चेतना जागृत हुई। पंच परिवर्तन अभियान के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, स्वदेशी उत्पादों का उपयोग, नागरिक कर्तव्य और कुटुम्ब प्रबोधन जैसे विषयों पर विशेष बल दिया गया, जिससे एक जिम्मेदार नागरिक समाज का निर्माण हो रहा है।

संघ का मूल मंत्र रहा है - 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति' और 'मम दीक्षा हिंदू रक्षा'। इन सम्मेलनों ने सामाजिक समरसता को केवल एक नारा नहीं बल्कि धरातल पर जीवंत व्यवहार बना दिया। सम्मेलनों के माध्यम से यह संदेश घर-घर पहुंचाया गया कि हिंदू धर्म में जन्म के आधार पर कोई ऊंच-नीच नहीं है। अस्पृश्यता एक सामाजिक अभिशाप है, जिसे उखाड़ फेंकना प्रत्येक हिंदू का धार्मिक कर्तव्य है।

शताब्दी वर्ष के इन विभिन्न सम्मेलनों में संघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने जो विचार रखें, वे आगामी शताब्दी के लिए भारत का मार्गप्रशस्त करने वाले हैं।

विभिन्न सम्मेलनों को सम्बोधित करते हुए पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत

हुए कहा कि कबीर, रविदास, नानक और चोखामेला ने जिस समरस समाज की कल्पना की थी, संघ उसी को साकार कर रहा है। धर्म के प्रति प्रतिबद्धता का अर्थ केवल पूजा-पद्धति नहीं बल्कि समाज के प्रति संवेदनशीलता है।

संघ के सरकार्यवाह अरुण कुमार जी ने आंतरिक सुरक्षा और वैचारिक सजगता पर बल देते हुए कहा कि हिंदू समाज का संगठन ही विश्व शांति की गारंटी है।

इन हिंदू सम्मेलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि ये केवल स्वयंसेवकों तक सीमित नहीं रहे। इनमें कला, विज्ञान, न्यायपालिका, उद्योग, खेल और अध्यात्म, शिक्षाविद्, कुलपति, पूर्व सेना अधिकारी आदि अनेक वर्ग के प्रतिष्ठित वक्ता सहभागी रहे। इन वक्ताओं ने समाज में हिंदू सम्मेलनों की उपयोगिता को नए सोपान पर स्थापित किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में आयोजित हजारों हिंदू सम्मेलन केवल अतीत के सिंहावलोकन के उत्सव नहीं थे बल्कि वे भविष्य के भारत का घोषणापत्र थे। इन सम्मेलनों ने भारतीय समाज को एक नई ऊर्जा, एक नया आत्मविश्वास और एक नया दृष्टिकोण दिया है।

संघ के कारण ही आज सामाजिक समरसता केवल पुस्तकों का विषय नहीं रह गया है बल्कि वह समाज के व्यवहार में उतर रहा है। छुआछूत और जातिवाद की बेड़ियों को तोड़कर हिंदू समाज एक विराट परिवार के रूप में खड़ा हो रहा है। संतों के वचनों, ग्रंथों के श्लोकों और संघ के शीर्ष नेतृत्व के मार्गदर्शन ने समाज को अधर्म और अलगाववाद के विरुद्ध 'धर्म' के मार्ग पर चलने की प्रतिबद्धता सिखाई है।

●●●

जी ने 'स्व' के जागरण और समाज की आंतरिक एकता पर बल दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा: संघ के 100 वर्ष पूरे होने का अर्थ यह नहीं है कि हमारा काम समाप्त हो गया बल्कि अब जिम्मेदारी और बढ़ गई है। हिंदू समाज को अपनी सुरक्षा और राष्ट्र के वैभव के लिए संगठित होना ही होगा, लेकिन यह संगठन किसी के विरोध में नहीं है। हिंदू होना यानी सत्य, करुणा, शुचिता और तपस्या के मार्ग पर चलना। जब तक हमारे समाज में एक भी भाई जाति या वर्ग के कारण पीछे छूटा हुआ है, तब तक हम स्वयं को पूर्ण हिंदू नहीं कह सकते। अस्पृश्यता और भेदभाव को हमें अपने आचरण से पूरी तरह मिटाना होगा।

उन्होंने पंच-परिवर्तन (सामाजिक समरसता, पर्यावरण, कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य और स्वदेशी) को जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया।

सरकार्यवाह दत्तात्रेय जी ने सम्मेलनों में राष्ट्र के समक्ष उपस्थित समसामयिक चुनौतियों और वैचारिक युद्ध पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, आज वैश्विक स्तर पर और देश के भीतर भी ऐसी ताकतें सक्रिय हैं जो भारत को जातियों और क्षेत्रों में बांटकर कमजोर करना चाहती हैं। ये हिंदू सम्मेलन उस विघटनकारी राजनीति का उत्तर हैं। हमारी विविधता हमारी विशेषता है, हमारा भेद नहीं। हम सब एक ही मां भारती की संतानें हैं। शताब्दी वर्ष इस संकल्प का वर्ष है कि हम समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को गले लगाएंगे और उसे राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करेंगे।

संघ के सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी ने इन सम्मेलनों में भारत के इतिहास और संतों की परम्परा का उल्लेख करते

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने प्रशिक्षण शिविरों के नामों, पाठ्यक्रम की अवधि आदि में बड़े बदलाव किए हैं। 'प्रांत' व्यवस्था को समाप्त करके सम्भाग बनाए गए हैं और शिक्षा वर्गों की अवधि और नामों को भी परिवर्तित किया गया है।

बदलाव की अब नई पहचान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने 84 वर्ष बाद अपने प्रशिक्षण शिविरों (संघ शिक्षा वर्ग) के नामों और अवधि और पाठ्यक्रम में व्यापक बदलाव किए हैं। बदलावों का मुख्य उद्देश्य युवाओं की भागीदारी बढ़ाना और प्रशिक्षण को अधिक व्यावहारिक बनाना है। प्रथम वर्ष का नामकरण अब संघ शिक्षा वर्ग कर उसकी अवधि को 20 दिन से घटाकर 15 दिन कर दी गई है। संघ शिक्षा वर्ग (द्वितीय वर्ष) का नाम बदलकर कार्यकर्ता विकास वर्ग-1 और संघ शिक्षा वर्ग (तृतीय वर्ष) का नाम बदलकर कार्यकर्ता विकास वर्ग-2 कर दिया गया है। प्रारम्भिक वर्ग नए स्वयंसेवकों के लिए एक नया तीन दिवसीय परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम जोड़ा गया है। प्राथमिक शिक्षा वर्ग 7 दिनों का होता है। संघ ने पाठ्यक्रम में भी बदलाव किए हैं। कार्यकर्ता विकास वर्ग-2 (पहले का तृतीय वर्ष) में 5 दिनों का मैदानी/व्यावहारिक प्रशिक्षण (बिहेवियरल ट्रेनिंग) जोड़ा गया है। तृतीय वर्ष कक्षा की विषयवस्तु में थोड़ा बदलाव किया गया है ताकि प्रशिक्षुओं को 5 दिनों के लिए मैदान में ले जाकर उन्हें व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके। दंड (बांस की छड़ी) को इसके छोटे संस्करण से बदल देने की चर्चा हो रही है। हालांकि लाठी संघ के गणवेश का हिस्सा नहीं है, फिर भी यह संघ की एक तरह की पहचान बन गई है। इस बदलाव के पीछे संघ के पदाधिकारियों ने तर्क दिया कि बड़ी संख्या में युवा संघ के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं। प्रत्येक साल 15,000 से 17,000 युवा प्रथम शिक्षा वर्ग में और लगभग 1 लाख युवा प्राथमिक शिक्षा वर्ग में भाग लेते हैं।

अब स्वयंसेवकों को संघ शिक्षा से जुड़ा सामान्य प्रशिक्षण तो दिया ही जाएगा। साथ ही उनकी रुचि किसी विषय विशेष में है तो उसका विशेष प्रशिक्षण भी अलग से दिया जाएगा। इनमें पर्यावरण, स्वच्छता, समाजसेवा, चिकित्सकीय सहायता, गो सेवा जैसे विषय शामिल किए गए हैं। संघ के प्रशिक्षण वर्ग के नाम और अवधि में भी बदलाव किया गया है। गुजरात के भुज में हुई संघ के कार्यकारी मंडल की बैठक में इसे मंजूरी दे दी गई।

राघव कुमार झा

संघ 2025 में अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है। संघ इसी कारण से कुछ नए बदलावों को अपनाने जा रहा है। हालांकि इससे पहले भी संघ शिक्षा वर्ग में बदलाव होता रहा है। पहले तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण

40 दिनों का होता था। बाद में इसे 35 दिन, फिर 30 और 25 दिन का किया गया। प्रथम और द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण पहले 30 दिनों का होता था, जिसे बाद में 25 और फिर 20 दिनों का कर दिया गया था।

संघ के वर्ग में प्रवेश के लिए भी अलग से ट्रेनिंग होगी। इसके लिए 3 दिन का संघ प्रवेश वर्ग शुरू किया गया है। संघ के अगले पाठ्यक्रमों तक जाने के लिए इसे पूरा करना अनिवार्य होगा। अभी तक संघ अपना प्रशिक्षण वर्ग सीधे प्राथमिक शिक्षा वर्ग से शुरू करता था। इसमें 7 दिन की ट्रेनिंग दी जाती थी। अब प्रवेश वर्ग में संघ के बारे में जानकारी देने के साथ राष्ट्रवाद की शिक्षा दी जाएगी। इसके पीछे तर्क यह है कि चिकित्सा, इंजीनियरिंग या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में पढ़ रहे या काम कर रहे संघ के स्वयंसेवकों के पास समय का अभाव रहता है। इसलिए प्रथम वर्ष का ढांचा इस तरह से बनाया जा रहा है कि पढ़ाई कर रहे स्वयंसेवक भी इसमें शामिल हो सकें। इसके साथ ही कार्यकर्ता विकास वर्ग- प्रथम में वही स्वयंसेवक ही शामिल हो सकेंगे, जिनके पास कोई जिम्मेदारी है। 5 दिन तक रुचि वाले क्षेत्र का प्रशिक्षण होगा। इसके अलावा तृतीय वर्ष को कार्यकर्ता विकास वर्ग-द्वितीय कहा जाएगा। यह 25 दिनों का प्रशिक्षण होगा, जिसमें 15 दिनों का संघ शिक्षा वर्ग और 10 दिनों तक जिम्मेदारी के अनुसार विशेष व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण उन्हीं स्वयंसेवकों को मिलेगा, जिन्होंने कार्यकर्ता विकास वर्ग प्रथम और द्वितीय का प्रशिक्षण लिया हो।

आज के आधुनिक युग में सभी वर्ग के लोगों के पास समय का काफी अभाव हो गया है। इस भौतिकवादी युग में किसी भी युवा के लिए 30 दिन तक रहकर अपने रोजी-रोटी के इतर कोई भी अन्य प्रशिक्षण के लिए समय निकालना कठिन हो गया है। संघ का यह बदलाव स्वागत योग्य कदम है। इस बदलाव का मुख्य उद्देश्य आधुनिक जीवनशैली (जैसे पढ़ाई और नौकरी में व्यस्तता) में युवाओं की भागीदारी को आसान बनाना, प्रक्रिया को अधिक व्यावहारिक और लचीला बनाना और बदलते समय के साथ कार्यप्रणाली में गुणवत्ता लाना है। संघ ने माना कि मेडिकल, आईआईटी और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों के युवाओं के पास 20-25 दिनों का लम्बा समय निकालना कठिन होता है। इसलिए पहले साल के प्रशिक्षण (प्रथम वर्ष) को 20 दिन से घटाकर 15 दिन कर दिया गया है ताकि पेशेवर छात्र भी आसानी से इसमें शामिल हो सकें। पहली बार स्वयंसेवकों को चुनने में केवल भागीदारी की बजाए 'गुणवत्ता' पर विशेष जोर दिया गया है। नए कार्यकर्ताओं के लिए शुरुआत में ही 3 दिन का 'प्रारम्भिक वर्ग' जोड़ा गया है। इसके माध्यम से नए लोगों को आधारभूत बातें समझने का अवसर मिलता है। संघ के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार अंग्रेजी शासनकाल से चले आ रहे प्रशिक्षण ढांचे और नामों को अधिक भारतीय और आधुनिक संदर्भ देने के लिए यह संशोधन किए गए हैं, जो समय के साथ उपयुक्त भी है।

संघ समय-समय पर अपने क्रियाकलापों में बदलाव करता रहा है। कुछ वर्ष पहले भी संघ ने अपने गणवेश में बदलाव कर हाफ पैंट को फुल पैंट कर दिया था। समय की मांग को देखते हुए ही यह सब बदलाव किए गए हैं।

संघ के संस्थापक सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के समय से कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए संघ शिक्षा वर्ग आयोजित करने की परम्परा शुरू हुई। 1940 में नागपुर में पहली बार संघ शिक्षा वर्ग के आयोजन की शुरुआत हुई थी, जिसमें पहली बार सम्पूर्ण भारत से स्वयंसेवक प्रशिक्षण हेतु शामिल हुए थे। ●●●

यूरोप दौरे से बढ़ती आर्थिक साझेदारी

यात्रा

भारत के प्रधान मंत्री मोदी ने विगत 15 से 20 मई तक 5 देशों का दौरा किया। इस दौरान कई महत्व-पूर्ण मुद्दों पर जहां समझौता व चर्चा हुई, वहीं नीदरलैंड ने सेमीकंडक्टर चिप बनाने वाली लिथोग्राफी मशीन भारत को आपूर्ति करने पर समझौता किया।

रंजीत कुमार

15 से 20 मई तक प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का 5 देशों का अहम दौरा ऐसे समय हुआ है जब दुनिया भारी उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है। प्रधान मंत्री का विदेश दौरा पर्यटन के लिए नहीं बल्कि भारत के राष्ट्रीय हितों को साधने के लिए होता है। संयुक्त अरब अमीरात की 15 मई से शुरू हुई यह यात्रा 20 मई को इटली में समाप्त हुई। वहां उन्होंने आपसी आर्थिक व सुरक्षा मुद्दों पर इटली की प्रधान मंत्री जार्जिया मेलोनी के साथ महत्वपूर्ण बातचीत की और इन क्षेत्रों में दूरगामी महत्व के सहयोग के समझौते भी किए गए। इस दौरान आपसी रिश्तों का स्तर बढ़ाकर विशेष सामरिक साझेदारी कर दिया गया। दोनों देशों के बीच दुर्लभ खनिज, रक्षा, समुद्री परिवहन, उच्च शिक्षा आदि क्षेत्रों में सहयोग के भी समझौते किए गए।

प्रधान मंत्री दौरे के पहले चरण में 15 मई को संयुक्त अरब अमीरात पहुंचे। खाड़ी के देशों में प्रधान मंत्री मोदी का संयुक्त अरब जाना चौंकाने वाला कदम था। दुनिया को प्रधान मंत्री मोदी ने यह संदेश दिया कि अपनी ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने में वह संयुक्त अरब अमीरात को अहम साझेदार मानते हैं। अमीरात के राष्ट्रपति शेख मुहम्मद जायेद अल नाहयान से भेंट के दौरान इस बारे में महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समझौते भी हुए।

अमीरात के दौरे के बाद 16 मई को प्रधान मंत्री मोदी ने यूरोप के चार देशों के दौरे के अंतर्गत नीदरलैंड को अपना पहला पड़ाव बनाया। नीदरलैंड के साथ रिश्तों को सामरिक साझेदारी का स्वरुप देने के साथ ही सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में सहयोग को गहरा करने का भी अहम समझौता किया गया। विदित हो कि भारत इन दिनों सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक बड़े वैश्विक खिलाड़ी बनने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहा है। जिसे मजबूती प्रदान करने के लिए नीदरलैंड की कम्पनियों का सहयोग आवश्यक माना जा रहा है।

एक महत्वपूर्ण निर्णय के अंतर्गत नीदरलैंड ने सेमीकंडक्टर चिप बनाने वाली लिथोग्राफी मशीन भारत को आपूर्ति करने का समझौता किया है। विदित हो कि इसके लिए चीन जैसे

देश भी नीदरलैंड पर निर्भर हैं। ज्ञातव्य हो कि अमेरिका ने चीन पर दबाव डालने की मंशा से धमकी दी थी कि वह नीदरलैंड से कहेगा कि चीनी सेमीकंडक्टर कम्पनियों को लिथोग्राफी मशीन की सप्लाई रोक दें।

वास्तव में नीदरलैंड की कम्पनी एएसएमएल पूरी दुनिया में सेमीकंडक्टर चिप बनाने वाली लिथोग्राफी मशीन का निर्माण और सप्लाई करती है। इसलिए आधुनिक तकनीक आधारित उपकरणों और संयंत्रों को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सेमीकंडक्टर चिप्स बनाने वाले देश को यदि लिथोग्राफी मशीन की सप्लाई रोक दी जाए तो उस देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो सकती है। नीदरलैंड के साथ सामरिक साझेदारी का समझौता करने का पहला बड़ा परिणाम यह मिला है कि भारत की टाटा इलेक्ट्रोनिक्स कम्पनी को नीदरलैंड की कम्पनी गुजरात के धोलेरा में 11 अरब डालर की लागत से सेमीकंडक्टर चिप बनाने वाली मशीन को स्थापित करने में सहयोग देगी। साथ ही इस क्षेत्र में तकनीकी जानकारी प्राप्त करने और शोध करने में सहायता करेगी, जिससे भारत लिथोग्राफी मशीन पर महारत प्राप्त कर सके।

नीदरलैंड के दौरे के बाद प्रधान मंत्री मोदी 17 मई को स्वीडन पहुंचे। वर्ष 2018 के बाद उनका यह दूसरा द्विपक्षीय दौरा था। स्टॉकहोम पहुंचने के बाद हवाई अड्डे पर उनकी आगवानी स्वयं प्रधान मंत्री उल्फ क्रिसटर्सन ने की और भारत के प्रधान मंत्री मोदी का जोरदार स्वागत किया। इस दौरे में मोदी ने स्वीडन के प्रधान मंत्री के साथ परस्पर सामरिक साझेदारी को ठोस रूप देने हेतु 2026-2030 तक के लिए एक संयुक्त कार्य योजना भी तय की। दोनों देशों के बीच अगली पीढ़ी की आर्थिक साझेदारी को गहराई देने पर सहमति जताई गई। इस दौरे में प्रधान मंत्री मोदी को स्वीडन के राजा और राजकुमारी की ओर से 'रॉयल ऑर्डर ऑफ पोलर आर्डर डिग्री कमांडर ग्रैंड क्रॉस' स्वीडन के सबसे पुराने व प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत और स्वीडन के बीच द्विपक्षीय व्यापार को और विस्तार देने की मंशा से प्रधान मंत्री मोदी ने स्वीडन के प्रमुख उद्योगपतियों के साथ एक बैठक भी की। इस वर्ष भारत-यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौता होने के बाद प्रधान मंत्री मोदी की यूरोपीय व्यापार जगत के साथ पहली अहम बैठक थी। इस बैठक में उन्होंने स्वीडिश उद्योगपतियों को बताया कि भारत किस तरह आर्टिफिशयल इंटेलीजेंस, सेमीकंडक्टर, डीपटेक मैनुफैक्चरिंग आदि क्षेत्रों में छलांग मार रहा है। स्वीडन के साथ आर्टिफिशयल इंटेलीजेंस कोरिडोर की स्थापना की जानकारी भी दी। प्रधान मंत्री मोदी ने स्वीडन के साथ रक्षा सहयोग को और गहरा कर रक्षा साज सामान के भारत में साझा उत्पादन के बारे में भी चर्चा की।

स्वीडन के बाद 19 मई को प्रधान मंत्री मोदी नॉर्वे की राजधानी ओस्लो पहुंचे। यहां पर 43 वर्ष बाद भारत के प्रधान मंत्री का दौरा हुआ, जिसे विशेष अहमियत दी गई। वहां भारत की एक बड़ी राजनयिक उपलब्धि यूरोप के नॉर्डिक समूह के पांच देशों के साथ शिखर बैठक का आयोजन रहा। नॉर्डिक देशों फिनलैंड, नॉर्वे, डेनमार्क, आइसलैंड और स्वीडन के प्रधान मंत्रियों के साथ प्रधान मंत्री मोदी ने तीसरी भारत-नॉर्डिक शिखर बैठक में हिस्सा लिया और यूरोप के इन अहम साझेदारों के साथ रिश्तों को नया आयाम देने के बारे में चर्चा की।

नार्डिक देशों के साथ हरित ऊर्जा, सतत नवीकरणीय ऊर्जा तकनीक आदि क्षेत्रों में सहयोग को गहराई देना भारत के दीर्घकालीन तकनीकी विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत और नार्डिक देशों के बीच हरित तकनीक के क्षेत्र में अनोखी सामरिक साझेदारी भी सम्पन्न हुई। वैश्विक तनाव के इस दौर में प्रधान मंत्री मोदी ने जनतंत्र और कानून के शासन के प्रति प्रतिबद्धता प्रकट की और आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग गहरा कर नियम आधारित विश्व व्यवस्था पर जोर दिया।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

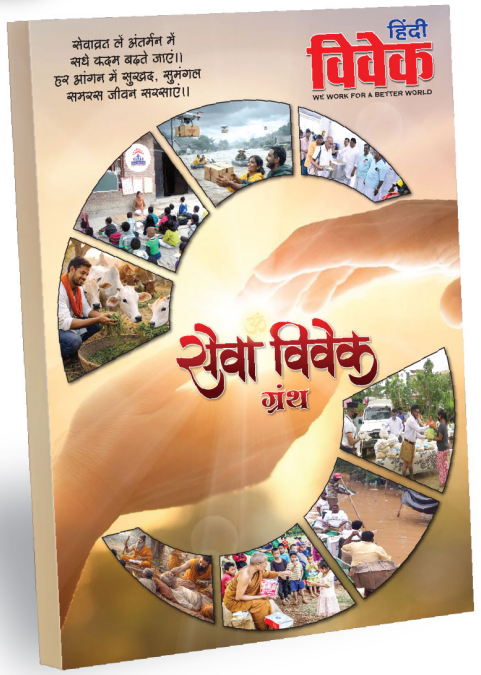

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

जेब से विकास दर तक

महंगाई पर नियंत्रण केवल कीमतों को स्थिर रखने का प्रश्न नहीं है बल्कि यह आम आदमी के सम्मानजनक जीवन और देश की आर्थिक प्रगति को सुरक्षित रखने की अनिवार्य शर्त है।

सतीश सिंह

महंगाई केवल मूल्यों में वृद्धि का नाम नहीं है बल्कि यह आम आदमी की क्रय-शक्ति, परिवारों की बचत, उपभोक्ता मांग, उद्योगों की लागत और अंततः अर्थव्यवस्था की विकास गति को प्रभावित करने वाली व्यापक आर्थिक चुनौती है। जब रसोई का बजट बिगड़ने लगता है, ईंधन महंगा होता है, परिवहन लागत बढ़ती है और रोजमर्रा की वस्तुओं के दाम ऊपर जाते हैं तो इसका असर केवल एक परिवार तक सीमित नहीं रहता। यह बाजार की मांग, उत्पादन, निवेश, रोजगार और आर्थिक स्थिरता तक फैल जाता है।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2026 में खुदरा महंगाई दर बढ़कर 3.48 प्रतिशत हो गई, जबकि मार्च में यह 3.40 प्रतिशत थी। पहली दृष्टि में यह वृद्धि मामूली लग सकती है, लेकिन खाद्य महंगाई का 4.20 प्रतिशत तक पहुंचना चिंता का विषय है। खाद्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि का सबसे अधिक असर निम्न और मध्यम वर्ग पर पड़ता है क्योंकि उनकी आय का बड़ा हिस्सा भोजन, किराया, परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी आवश्यकताओं पर खर्च होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महंगाई दर 3.74 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 3.16 प्रतिशत दर्ज की गई है, जिससे स्पष्ट है कि गांवों और छोटे कस्बों में रहने वाले परिवारों पर महंगाई का दबाव अधिक है।

महंगाई की गम्भीरता थोक मूल्यों में आए तेज उछाल से और बढ़ जाती है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल में थोक मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई 8.3

प्रतिशत तक पहुंच गई, जो मार्च में 3.88 प्रतिशत थी। यह पिछले 42 महीनों का उच्चतम स्तर है। थोक महंगाई में वृद्धि का अर्थ है कि उद्योगों की उत्पादन लागत बढ़ रही है। जब कच्चा माल, ईंधन, परिवहन और विनिर्माण लागत महंगी होती है तो कम्पनियां कुछ समय बाद इसका बोझ उपभोक्ताओं पर डालने लगती हैं। यही कारण है कि थोक महंगाई भविष्य की खुदरा महंगाई का संकेत भी मानी जाती है।

ईंधन महंगाई इस संकट का सबसे संवेदनशील पक्ष है। पश्चिम एशिया संकट के कारण ईंधन श्रेणी की महंगाई अप्रैल में 24.71 प्रतिशत तक पहुंच गई, जबकि पिछले महीने यह केवल 1.05 प्रतिशत थी। एलपीजी, पेट्रोल और डीजल के मूल्यों में दो अंकों की वृद्धि दर्ज की गई। पेट्रोल और डीजल महंगे होने का असर केवल वाहन चालकों तक सीमित नहीं रहता। माल ढुलाई, कृषि, उद्योग, डिलीवरी सेवाएं, निर्माण कार्य और खुदरा व्यापार सभी इससे प्रभावित होते हैं। जब परिवहन लागत बढ़ती है तो सब्जियां, फल, दूध, ब्रेड, खाद्यान्न, दवाइयां और अन्य उपभोक्ता वस्तुएं भी महंगी होने लगती हैं।

भारत की बड़ी चुनौती कच्चे तेल पर आयात निर्भरता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में वृद्धि से आयात बिल बढ़ता है, व्यापार घाटा चौड़ा होता है और रुपए पर दबाव आता है। कमजोर रुपया तेल, गैस, उर्वरक, मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक सामान और दवाइयों के आयात को महंगा बना देता है। इससे उत्पादन लागत बढ़ती है और महंगाई का चक्र और गहरा हो जाता है।

महंगाई का सबसे सीधा असर घरेलू बजट पर पड़ता है। दूध, खाद्य तेल, सब्जियां, ईंधन, परिवहन और दवाइयों जैसी आवश्यक चीजों के महंगे होने से परिवारों की खर्च क्षमता घटती है। निम्न आय वर्ग के पास खर्च घटाने की गुंजाइश कम होती है, इसलिए उन्हें भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी आधारभूत आवश्यकताओं में भी समझौता करना पड़ सकता है।

मध्यम वर्ग के सामने भी दोहरी चुनौती खड़ी हो जाती है। एक ओर रोजमर्रा की वस्तुएं महंगी होती हैं, दूसरी ओर बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य खर्च, आवास, वाहन, बीमा और कर्ज की किस्तों का बोझ बना रहता है। ऐसे में परिवार पहले गैर-आवश्यक खर्चों में कटौती करते हैं। मनोरंजन, यात्रा, बाहर खाना, कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य उपभोग खर्च कम होने लगते हैं। धीरे-धीरे बचत घटती है और भविष्य की योजनाएं टलने लगती हैं। घर खरीदना, वाहन लेना, बच्चों की उच्च शिक्षा, छोटे व्यवसाय में निवेश और दीर्घकालिक वित्तीय योजनाएं प्रभावित होती हैं।

बचत में कमी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत नहीं है। भारतीय परिवारों की बचत देश की वित्तीय स्थिरता का महत्वपूर्ण आधार रही है। यदि महंगाई के कारण बचत घटती है तो निवेश क्षमता भी प्रभावित होती है। मांग में कमी का सीधा असर उद्योगों पर पड़ता है। एफएमसीजी, ऑटोमोबाइल, होटल, एयरलाइन, पेंट, सीमेंट, रियल एस्टेट और खुदरा व्यापार जैसे क्षेत्रों की बिक्री कमजोर हो सकती है। जब मांग घटती है तो कम्पनियां उत्पादन कम करती हैं, नई भर्ती टालती हैं और निवेश योजनाओं को धीमा करती हैं। इससे रोजगार सृजन और आय वृद्धि पर दबाव बढ़ता है।

महंगाई का सामाजिक प्रभाव भी गम्भीर है। जब आवश्यक वस्तुएं महंगी होती हैं तो गरीब परिवार पौष्टिक भोजन, स्वास्थ्य जांच और बच्चों की पढ़ाई जैसे खर्चों में कटौती करने लगते हैं। इससे जीवन स्तर प्रभावित होता है और आर्थिक असमानता बढ़ती है। उच्च आय वर्ग महंगाई को कुछ सीमा तक सहन कर सकता है, लेकिन सीमित आय वाले परिवारों के लिए यह सम्मानजनक जीवन की चुनौती बन जाती है।

सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक के सामने इस समय संतुलन की कठिन परीक्षा है। महंगाई रोकने के लिए यदि ब्याज दरें ऊंची रखी जाती हैं तो कर्ज महंगा होता है और विकास धीमा पड़ सकता है। दूसरी ओर यदि वृद्धि को सहारा देने के लिए दरों में अधिक नरमी रखी जाए तो महंगाई नियंत्रण कठिन हो सकता है। इसलिए नीति-निर्माण में संतुलन और दूरदर्शिता आवश्यक है।

वर्तमान परिस्थिति में आयात निर्भरता घटाने, ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करने, वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा देने और खाद्य आपूर्ति श्रृंखला सुधारने की आवश्यकता है। कृषि उत्पादों के भंडारण, कोल्ड चेन, लॉजिस्टिक्स और परिवहन व्यवस्था को मजबूत कर खाद्य महंगाई को नियंत्रित किया जा सकता है। साथ ही घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देकर महत्वपूर्ण वस्तुओं के आयात पर निर्भरता कम करनी होगी। महंगाई केवल आर्थिक आंकड़ा नहीं बल्कि आम जनता के जीवन की वास्तविक चुनौती है। यह रसोई से बाजार तक, बाजार से उद्योग तक और उद्योग से विकास दर तक असर डालती है। यदि महंगाई लम्बे समय तक बनी रहती है तो आम आदमी की मुश्किलें बढ़ेंगी, बचत घटेगी, मांग कमजोर होगी, निवेश धीमा पड़ेगा और अर्थव्यवस्था की गति प्रभावित होगी। इसलिए समय की मांग है कि सरकार, रिजर्व बैंक, उद्योग जगत और आम नागरिक-सभी सजग, संतुलित और दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाएं। ●●●

भ्रष्टाचार

नीट परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होने से संदेह के कठघरे में केवल प्रशासन, व्यवस्था ही नहीं हैं बल्कि समाज की नैतिकता पर भी प्रश्नचिन्ह उठ रहे हैं। परीक्षा में हुए भ्रष्टाचार से यह बात सामने आती है कि शिक्षा भी व्यापार और प्रतिभा भी सौदे की वस्तु बनती जा रही है।

अलकेश चतुर्वेदी

प्रतिभा के विरुद्ध षड्यंत्र

नीट जैसी परीक्षाओं में प्रश्नपत्र लीक होना मात्र एक प्रशासनिक चूक नहीं है। यह उन लाखों विद्यार्थियों के सपनों पर प्रहार है, जिन्होंने दिन-रात परिश्रम करके अपने भविष्य की नींव रखी है। यह उस समाज के नैतिक संकट का संकेत है, जहां परिश्रम के स्थान पर शॉर्टकट, सत्य के स्थान पर छल और चरित्र के स्थान पर चतुराई को महत्व मिलने लगा है। प्रश्न यह नहीं कि प्रश्नपत्र किसने चुराया? प्रश्न यह है कि ऐसा वातावरण किसने बनाया जहां शिक्षा भी व्यापार और प्रतिभा भी सौदे की वस्तु बनती जा रही है।

नीट का प्रश्नपत्र नहीं, राष्ट्र का नैतिक विवेक लीक हुआ है

जब किसी राष्ट्र की सबसे प्रतिष्ठित और संवेदनशील परीक्षाओं का प्रश्नपत्र परीक्षा कक्ष तक पहुंचने से पहले अपराधियों के हाथों में पहुंच जाए तो यह मान लेना चाहिए कि समस्या केवल परीक्षा व्यवस्था की नहीं है। यह उस समाज के अंतर्मन की समस्या है, जहां सफलता का अर्थ केवल किसी भी प्रकार जीत जाना है। नीट जैसी परीक्षा केवल एक प्रवेश परीक्षा नहीं है, यह लाखों युवाओं के सपनों, परिवारों की आशाओं और राष्ट्र की स्वास्थ्य व्यवस्था के भविष्य का द्वार है। ऐसे में प्रश्नपत्र लीक होना केवल परीक्षा का संकट नहीं, राष्ट्रीय विश्वास का संकट है।

समाचारों और जांच एजेंसियों के सामने आए तथ्यों से बार-बार यह संकेत मिला है कि ऐसे अपराध अचानक नहीं होते। इनके पीछे संगठित गिरोह, तकनीकी चतुराई, अंदरूनी सूचनाएं, आर्थिक लालच और अवसरवादी नेटवर्क सक्रिय रहते हैं। कोई अकेला व्यक्ति इतनी बड़ी परीक्षा को प्रभावित नहीं कर सकता। इसके पीछे योजनाबद्ध व्यवस्था होती है। जहां कोई सूचना देता है, कोई सौदा करता है, कोई सम्पर्क बनाता है और कोई मासूम अभिभावकों की चिंता को व्यापार में बदल देता है।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि यह केवल अपराधियों की समस्या नहीं रह गई है, यह सामाजिक मानसिकता का संकट भी बनती जा रही है। यदि कोई प्रश्नपत्र बिकता है तो कोई उसे खरीदने वाला भी है। यदि कोई परीक्षा में अनुचित लाभ लेने को तैयार है तो इसका अर्थ है कि समाज का एक वर्ग परिश्रम की अपेक्षा छल को अधिक उपयोगी मानने लगा है।

भारतीय शिक्षा की आत्मा कभी ऐसी नहीं थी। हमारे यहां शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन नहीं थी, वह मनुष्य निर्माण का माध्यम थी। गुरु केवल विषय नहीं पढ़ाता था, वह जीवन जीने का मार्ग भी दिखाता था। इसलिए कहा गया- 'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वह है जो मनुष्य को ऊंचा उठाए, मुक्त करे, संस्कारित करे। आज वही शिक्षा कई स्थानों पर केवल अंक,

रैंक और पैकेज की दौड़ बनती दिखाई देती है।

यह भी कटु सत्य है कि शिक्षा के बाजारीकरण ने इस संकट को और बढ़ाया है। यह कहना अनुचित होगा कि सभी कोचिंग संस्थान दोषी हैं। अनेक संस्थान अत्यंत निष्ठा से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं, किंतु जहां शिक्षा सेवा के स्थान पर लाभ का उद्योग बन जाती है, वहां कुछ संदिग्ध तत्व व्यवस्था की कमजोरियों को अवसर की तरह देखने लगते हैं। वर्षों से विभिन्न परीक्षा विवादों में कोचिंग नेटवर्क, बिचौलियों और तथाकथित सफलता दिलाने वाले गिरोहों के नाम सामने आते रहे हैं। यह संयोग नहीं हो सकता।

एक गम्भीर प्रश्न यह भी है कि हमारा प्रशासन इस समस्या को पर्याप्त गम्भीरता से क्यों नहीं लेता? जब त्योहारों, चुनावों या सम्भावित अशांति के समय संदिग्ध तत्वों पर विशेष निगरानी रखी जा सकती है तो करोड़ों विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़े परीक्षा अपराधों के मामले में ऐसी सतर्कता क्यों नहीं? जिन व्यक्तियों, संस्थानों या नेटवर्कों का नाम पहले परीक्षा अपराधों में आ चुका हो, उन पर परीक्षा से पहले विशेष निगरानी क्यों न रखी जाए? निवारक दृष्टिकोण अपराध घटने के बाद की कार्रवाई से कहीं अधिक प्रभावी होता है, परंतु केवल पुलिस, कानून या तकनीक इस समस्या का समाधान नहीं कर सकते। प्रत्येक मोबाइल की निगरानी सम्भव नहीं। हर बंद कमरे की बातचीत नहीं सुनी जा सकती। अंततः समाज का चरित्र ही व्यवस्था की रक्षा करता है। यदि परिवार बच्चों को यह संदेश देंगे कि किसी भी प्रकार सफल होना ही पर्याप्त है तो फिर नैतिकता का पाठ पुस्तकों तक सीमित रह जाएगा। यह भी विचारणीय है कि क्या हमने परीक्षा को आवश्यकता से अधिक भयावह बना दिया है? जब एक ही परीक्षा को जीवन-मरण का प्रश्न बना दिया जाता है, तब कमजोर मन शॉर्टकट की ओर आकर्षित होते हैं। हमें ऐसी मूल्यांकन व्यवस्था पर भी विचार करना होगा जो केवल एक दिन के प्रदर्शन पर जीवन का निर्णय न करे।

नीट का प्रश्नपत्र लीक होना केवल प्रशासनिक असफलता नहीं है, यह समाज के लिए चेतावनी है। यदि प्रतिभा की जगह छल को स्थान मिला तो केवल परीक्षाएं नहीं, राष्ट्र का भविष्य भी कमजोर होगा। राष्ट्र की रक्षा केवल सीमाओं पर तैनात सैनिक नहीं करते, उसे निष्ठावान शिक्षक, सत्यनिष्ठ विद्यार्थी और नैतिक परिवार भी सुरक्षित रखते हैं। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि नीट का प्रश्नपत्र नहीं, हमारे राष्ट्रीय चरित्र का एक हिस्सा लीक हुआ है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य
₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of
HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

हिंदी पत्रकारिता दिवस- 30 मई

200 वर्षों से अब तक की यात्रा

उपलब्धियां, चुनौतियां व सोशल मीडिया की अराजकता

1926 से 2026 तक हिंदी पत्रकारिता ने गुलामी से स्वतंत्रता, प्रिंट से डिजिटल और अब एआई युग तक लम्बी यात्रा तय की है। हिंदी पत्रकारिता दिवस हमें याद दिलाता है कि कलम अब डिजिटल है, पर उसकी नैतिकता वही रहनी चाहिए- सत्य की रक्षा और समाज का मार्गदर्शन।

आशीष कुमार 'अंशु'

हिंदी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि 1826 से 2026 तक यह क्षेत्र केवल सूचना का माध्यम नहीं रहा बल्कि सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय निर्माण और लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में विकसित हुआ है। पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा 1826 में शुरू की गई 'उदंत मार्तण्ड' से लेकर आज के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) संचालित डिजिटल युग तक हिंदी पत्रकारिता ने तकनीकी, भाषाई, व्यावसायिक और दृष्टिकोणगत स्तर पर क्रांतिकारी बदलाव देखे हैं।

प्रिंट पत्रकारिता: कलम से छापेखाने तक

हिंदी पत्रकारिता का प्रारम्भिक दौर गुलामी की काली छाया में बीता। 1920-1940 के दशक में कर्मवीर, प्रताप, चांद और सरस्वती जैसी पत्रिकाएं स्वतंत्रता संग्राम का हथियार बनीं। इनमें भाषा का स्तर उच्च था, सम्पादकीय गहराई अद्वितीय थी और राष्ट्रवाद की चिंगारी जगाने का काम किया गया।

स्वाधीनता के बाद 1950 के दशक से नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान और अमर उजाला जैसे समाचार पत्रों ने क्षेत्रीय विस्तार किया। ग्रामीण और छोटे शहरों तक पहुंच बनाई। आज का प्रिंट मीडिया रंगीन पृष्ठों, मल्टी-कलर प्रिंटिंग, विश्लेषणात्मक रिपोर्टिंग और विशेषांक के साथ एक बड़े उद्योग का रूप ले चुका है। पहले पत्रकारिता मिशन थी, अब व्यावसायिकता हावी है। विज्ञापनों का दबाव बढ़ा है, परंतु गहराई वाली रिपोर्टिंग अभी भी प्रिंट में बची हुई है, जो डिजिटल की सतही ब्रेकिंग न्यूज से अलग है। हालांकि मुद्रण लागत और डिजिटल प्रतिस्पर्धा के कारण प्रिंट की पहुंच सीमित हो रही है।

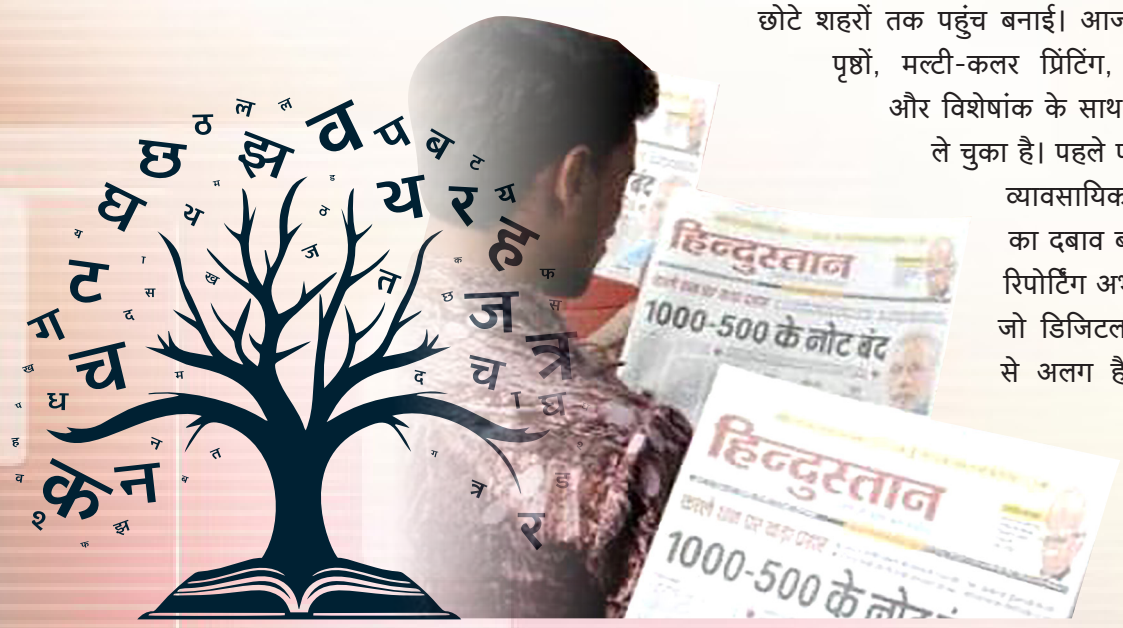

इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता: ध्वनि से दृश्य तक

स्वतंत्रता के बाद आकाशवाणी ने समाचारों को जन-जन तक पहुंचाया। 1980 के दशक में दूरदर्शन ने दृश्य माध्यम प्रदान किया, लेकिन सरकारी नियंत्रण रहा। 1990 के उदारीकरण के बाद एनडीटीवी इंडिया, आज तक, स्टार न्यूज जैसे निजी चैनलों ने क्रांति लाई।

24 घंटे न्यूज चैनलों ने समाचारों की गति बढ़ाई। अब घटना होते ही स्क्रीन पर लाइव आ जाती है। दर्शक संख्या बढ़ी, क्षेत्रीय चैनल उभरे और हिंदी में समाचारों की मांग बढ़ी।

ब्रेकिंग न्यूज की होड़ में सनसनीखेजपन, तथ्यों की उपेक्षा और पक्षपात बढ़ा। टीआरपी रेटिंग्स ने पत्रकारिता की गरिमा को प्रभावित किया। फिर भी, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने जागरूकता का स्तर ऊंचा किया, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

डिजिटल पत्रकारिता: स्मार्टफोन से एआई तक

2010 के बाद स्मार्टफोन क्रांति ने परिदृश्य बदल दिया। ऑपइंडिया, प्रभा साक्षी, उदय इंडिया (हिंदी), पाथेय कण जैसे पोर्टल्स ने हिंदी को डिजिटल दुनिया में मजबूत जगह दिलाई। ऋतम जैसी ऐप्स ने मोबाइल पर समाचार पहुंचाई।

नागरिक पत्रकारिता का उदय हुआ। कोई भी व्यक्ति फोन से वीडियो बनाकर फेसबुक, यूट्यूब या एक्स पर अपलोड कर सकता है। यू ट्यूब चैनल्स ने वैकल्पिक आवाजें दीं।

2026 तक एआई का प्रभाव गहरा हो चुका है- ऑटोमेटेड अनुवाद, व्यक्तिगत न्यूज फीड, एंकरलेस बुलेटिन और डेटा एनालिटिक्स आम हो गए हैं। भाषा में बदलाव आया: क्लिष्ट संस्कृतनिष्ठ हिंदी से हिंग्लिश और सहज बोलचाल की हिंदी की ओर।

सोशल मीडिया की अराजकता: डिजिटल युग की सबसे बड़ी चुनौती सोशल मीडिया द्वारा फैलाई जा रही अराजकता है। फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर फेक न्यूज, डीप फेक, अफवाहें और घृणा-भाषण पल भर में वायरल हो जाते हैं। 2020 के दशक में कई दंगे, साम्प्रदायिक तनाव और चुनावी ध्रुवीकरण इसी अराजकता का परिणाम रहे।

कोई सम्पादकीय फिल्टर नहीं, कोई जवाबदेही नहीं - केवल एल्गोरिदम जो लाइक्स, शेयर्स बढ़ाने के लिए सनसनी फैलाता है। मुख्य धारा की मीडिया भी कभी-कभी सोशल ट्रेंड्स के पीछे भागता है, जिससे विश्वसनीयता गिरती है। सिटीजंस जर्नलिज्म की स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी की कमी ने सूचना प्रदूषण को बढ़ावा दिया है।

भाषा, दृष्टिकोण और व्यावसायीकरण में परिवर्तन

भाषा: पहले औपचारिक और साहित्यिक, अब सहज, समावेशी और युवा-केंद्रित।

दृष्टिकोण: राष्ट्रवाद से विकास, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण, डेटा-आधारित रिपोर्टिंग की ओर।

व्यावसायीकरण: बड़े कॉर्पोरेट्स का नियंत्रण, लेकिन कुछ स्वतंत्र प्लेटफॉर्म्स अभी भी खोजी पत्रकारिता कर रहे हैं।

भविष्य की दिशा

पिछले 100 वर्षों में हिंदी पत्रकारिता ने पहुंच और गति में अभूतपूर्व वृद्धि की है। इंटरनेट ने सीमाएं तोड़ीं। 'वेब दुनिया' जैसे प्रयासों से हिंदी ने अंग्रेजी की एकाधिकार को चुनौती दी। आज प्रत्येक समाचारपत्र का ऑनलाइन संस्करण 24 घंटे उपलब्धता और मोबाइल-प्रथम दृष्टिकोण सामान्य है।

चुनौतियां भी कम नहीं- फेक न्यूज से लड़ना, एआई से उत्पन्न नैतिक प्रश्न, पत्रकारों की सुरक्षा और व्यावसायिक दबाव।

हिंदी पत्रकारिता को अब मिशन और मुनाफे का संतुलन बनाना होगा। विश्वसनीयता, खोजी पत्रकारिता और तथ्य-आधारित विश्लेषण को प्राथमिकता देनी होगी। सोशल मीडिया की अराजकता को नियंत्रित करने के लिए मीडिया लिटरेसी, फैक्ट-चेकिंग यूनिट्स और मजबूत नियामक ढांचे की आवश्यकता है।

कमियों से घबराएं नहीं, स्वीकारें

सफल लोगों ने आलोचना को अपनाकर खुद को साबित किया

महेंद्र सिंह धोनी
धीमी बल्लेबाजी पर आलोचना मिली।

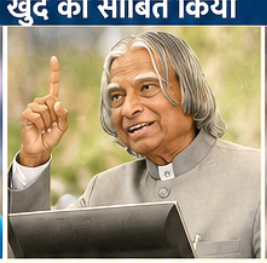

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
असफल प्रोजेक्ट पर आलोचना मिली।

सचिन तेंदुलकर
उनके कद को लेकर आलोचना झेलनी पड़ी।

सुधार

अपनी कमियां सुनना भले किसे अच्छा लगता है। हर कोई अपनी और अपने कामों की प्रशंसा ही सुनना चाहता है। यदि आपकी कोई कमियां निकालता भी है तो आप उसपर क्रोधित हो जाते हैं। तो आप ऐसा मत कीजिए, इसे सकारात्मक तरीके से लीजिए।

रचना प्रियदर्शनी

हर किसी को आए दिन किसी से किसी बात पर आपकी कमियां या आपकी आलोचना सुनने को मिलती है। कुछ लोग यह सब सुन कर चिढ़ जाते हैं और उस व्यक्ति से कन्नी काटना शुरू कर देते हैं, जो उनके काम में कमियां निकालता है। वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य उन आलोचनाओं को सकारात्मक रूप से लेते हुए अपनी कमियों को सुधारने पर ध्यान देते हैं। ऐसे ही लोग जीवन में आगे बढ़ते हैं और कुछ विशेष करते हैं।

आलोचना हमारे व्यक्तित्व का आईना है। व्यक्ति अधिकतर अपनी कमियां स्वयं नहीं देख पाता, लेकिन दूसरे लोग उन्हें देख लेते हैं। जब कोई हमारी गलती बताता है तो समझ लीजिए कि वह हमें सुधरने का अवसर दे रहा है। कबीरदास ने कहा है 'निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय। बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय'।। अर्थात जो व्यक्ति आपकी कमियां (निंदा) करता है, उसे अपने हमेशा पास रखना चाहिए। कारण, ऐसा व्यक्ति आपकी कमियां बताकर आपके स्वभाव को बिना साबुन-पानी के शुद्ध और निर्मल बना देता है।

हमें लगता है कि हम हमेशा सही हैं। कमियां या आलोचना इसी अहंकार पर चोट करती है। यदि हम शांत मन से सुनें तो समझ आएगा कि सामने वाला शत्रु नहीं, शिक्षक है। हर सफल व्यक्ति ने जीवन में कठोर आलोचनाएं झेली हैं। महेंद्र सिंह धोनी को धीमी बल्लेबाजी पर, कलाम को असफल प्रोजेक्ट पर आलोचना मिली, सचिन तेंदुलकर को उनके कद को लेकर आलोचना झेलनी पड़ी, लेकिन ये लोग अपनी आलोचनाओं से दुखी नहीं हुए बल्कि उसे स्वीकार करते हुए स्वयं को सिद्ध किया।

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कभी न कभी आलोचना या अपनी कमियों को लेकर तीखी प्रतिक्रियाओं का सामना करता है। अपनी कमियां सुनना अधिकतर कड़वा लगता है क्योंकि वह हमारे अहंकार को ठेस पहुंचाती है, लेकिन यदि हम गहराई से सोचें तो पाएंगे कि यह हमारे व्यक्तित्व को निखारने का सबसे अच्छा औजार है। प्रशंसा हमें अच्छा अनुभव कराती है, पर कमियां या आलोचना हमें अच्छा बनाती है।

हम स्वयं को जिस दृष्टि से देखते हैं, दुनिया हमें उसी दृष्टि से नहीं देखती। हमारे व्यवहार, काम और आदतों में कई कमियां ऐसी होती हैं जो हमें दिखाई नहीं देतीं। कमियां या आलोचना वह दर्पण है जो हमें हमारी छिपी हुई कमजोरियां दिखाता है। जैसे एक दर्जी ढीला-सिला कोट तभी सुधार पाता है जब ग्राहक उसकी कमियां बताए, वैसे ही हम अपने व्यक्तित्व को तभी सुधार सकते हैं जब कोई हमारी कमी की ओर इंगित करे।

अपनी प्रशंसा सुनना किसे अच्छा नहीं लगता, लेकिन लगातार प्रशंसा सुनने से व्यक्ति में अहंकार आ

जाता है। वह आगे सीखने में रुचि नहीं लेता। हमारे अंदर की कमियां या आलोचना हमें जमीन से जोड़े रखती है। वह याद दिलाती है कि हम सम्पूर्ण नहीं हैं और अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है। जिस दिन हम मान लेते हैं कि हम सब जानते हैं, उसी दिन हमारा विकास रुक जाता है। कमियां इसी अहंकार को तोड़कर हमें विनम्र और जिज्ञासु बनाती है। हालांकि यह भी आवश्यक है कि हम रचनात्मक और विध्वंसात्मक कमियों में अंतर करें। यह समझना आवश्यक है कि हर कमियां या आलोचना सहायक नहीं होती। कमियां दो तरह की होती है- रचनात्मक और विध्वंसात्मक। जो व्यक्ति सुधार का तरीका भी बताए, उसकी बात गांठ बांध लें। जो केवल नीचा दिखाने के लिए बोले, उसे अनदेखा करें। अर्थात्, रचनात्मक आलोचना में 'क्या गलत है' के साथ 'कैसे ठीक हो सकता है' यह भी बताया जाता है। उसका उद्देश्य नीचा दिखाना नहीं, ऊपर उठाना होता है। वहीं विध्वंसात्मक आलोचना केवल जलन या द्वेष से की जाती है। हमें रचनात्मक कमियों को अपनाना और विध्वंसात्मक को अनदेखा करना सीखना होगा।

आलोचना स्वीकार करने के लिए तीन बातें अपनाएं- पहला, तुरंत प्रतिक्रिया न दें। दूसरा, बात को व्यक्तिगत न लें। तीसरा, 'धन्यवाद' कहना सीखें। याद रखें, कोयला दबाव में ही हीरा बनता है। आलोचना वही दबाव है जो हमें तराशता है, निखारता है। इसलिए आलोचना से डरें नहीं, उसे स्वीकारें क्योंकि जो आज आपको चुभ रही है, वही कल आपकी पहचान बनाएगी।

जीवन एक सतत सुधार की प्रक्रिया है। कमियां या आलोचना उस प्रक्रिया का उत्प्रेरक है। वह कड़वी दवा की तरह है- स्वाद खराब, पर असर अच्छा। जो व्यक्ति अपने अंदर की कमियों से डरता है, वह औसत रह जाता है, जो उसे स्वीकार करता है, वह असाधारण बन जाता है। इसलिए अगली बार जब कोई आपकी आलोचना करे तो नाराज मत होइए। मुस्कुराइए क्योंकि किसी ने आपको बेहतर व्यक्ति बनने का एक अवसर दिया है। अपनी कमियों से अपने गुणों को निखारें ताकि आपका व्यक्तित्व समय के साथ और भी निखरता रहे, दमकता रहे। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

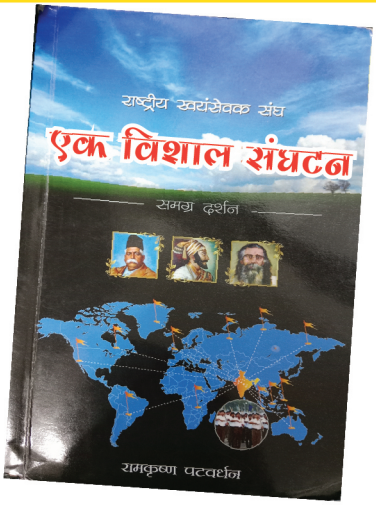

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra Branch : Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 IFSC : MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

इन दिनों उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में गर्मी और लू का प्रकोप जारी है। लोग 47 डिग्री सेल्सियस के उच्चतम तापमान को झेल रहे हैं। गर्म हवाओं और लू के थपेड़ों से बचने के लिए लोग तरह-तरह के उपाय कर रहे हैं।

सूरज के चढ़ते तेवर

भारत के कई क्षेत्रों में इन दिनों प्रचंड गर्मी से लोग बेहाल हैं। यहां तक कि लोगों का सामान्य जनजीवन भी अस्त-व्यस्त हो गया है। सुबह से ही सूरज का पारा बढ़ता ही जाता है जिसके कारण लोग घर से निकलने में कतरा रहे हैं। विदित हो कि नौतपा 2026 की शुरुआत 25 मई से होगी और इसका समापन 2 जून को होगा। इस अवधि में सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करते हैं, जिसके प्रभाव से अगले 9 दिनों तक भीषण गर्मी और प्रचंड लू का प्रकोप रहता है। नौतपा के पहले से ही लोग गर्मी की मार झेल रहे हैं। गर्मी के कारण कई लोग बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। लू के थपेड़ों की चपेट में लोग आ रहे हैं।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी की तीव्रता लगातार बढ़ती जा रही है। शहरों में पेड़ों की कटाई, बढ़ता प्रदूषण और कंक्रीट के जंगलों ने तापमान को और अधिक बढ़ा दिया है। प्रचंड गर्मी का प्रभाव केवल मनुष्यों पर ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों पर भी पड़ रहा है। तालाब और जलस्रोत सूखने लगे हैं, जिससे जीव-जंतुओं को पानी के लिए भटकना पड़ता है। कई स्थानों पर पक्षियों के मरने की घटनाएं भी सामने आती हैं। बिजली की बढ़ती मांग के कारण बार-बार बिजली कटौती होती है, जिससे लोगों की परेशानियां और बढ़ जाती हैं।

भीषण गर्मी से बचने के लिए कई लोग तरह-तरह के उपाय कर रहे हैं ताकि शरीर व मन दोनों को ठंडक मिले, शीतलता मिले। गर्मी की शुरूआत के साथ ही लोग स्वदेशी पेय पदार्थों को पी रहे हैं। जिनमें सत्तू का शर्बत, नींबू पानी (शिकंजी), आम पन्ना और छाछ आदि। ये प्राकृतिक रूप से एनर्जी और इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी को भी पूरा करते हैं।

सत्तू का शर्बत- इसे बिहार और उत्तर प्रदेश का पावर हाउस ड्रिंक माना जाता है। यह पेट को ठंडा रखता है और तुरंत ऊर्जा देता है।

आम पन्ना- यह कच्चे आम से बनता है और लू से बचाने के लिए सबसे असरदार देसी उपाय है।

नींबू शिकंजी- यह सबसे आसानी से बनने वाला और सबसे पसंदीदा क्लासिक समर ड्रिंक है।

छाछ- यह एक बेहतरीन प्रोबायोटिक ड्रिंक है जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखती है और शरीर के तापमान को कम करती है।

भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक महंगाई को देखते हुए लोगों से 'वर्क फ्रॉम होम' की सलाह दी है। ऐसे में इस सलाह से लोगों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी है क्योंकि भीषण गर्मी और लू की थपेड़ों के कारण लोगों के घर से निकलने में पसीने छूट जा रहे हैं, ऐसे में प्रधान मंत्री की यह सलाह 'सोने पर सुहागा' का काम कर रही है। लोग धूप और लू से बचने के लिए घर से ही काम कर रहे हैं, जिससे लोग राहत की सांस ले रहे हैं।

आखिरी सवाल का जवाब

फिल्म समीक्षा

आप संघ को समझना चाहते हैं, देखना चाहते हैं और संघ के बारे में आपके मन में प्रश्न उठ रहे हैं, तो इसका जवाब आप को आखिरी सवाल में मिल जाएगा। जी हां, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर बनी यह फिल्म नए भारत के निर्माण में उसके योगदान को स्पष्ट करती है।

अतुल गंगवार

विश्व के सबसे बड़े गैर राजनैतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना का ये 100वां वर्ष है। संघ के 100 वर्ष पूरे होने पर एआई यानी आर्टिफिशिएल इंटेलीजेंस की सहायता से फिल्म 'शतक' बनाई गई थी, जो संघ पर आधारित फिल्म थी। इस वर्ष संघ पर ही आधारित निर्माता निखिल नंदा की फिल्म 'आखिरी सवाल' प्रदर्शित हुई है। ये फिल्म संघ पर लगाए गए उन आरोपों का जवाब देने का प्रयास करती है, जो अधिकतर उसके विरोधी उस पर लगाते हैं। अभिजीत मोहन वारंग द्वारा लिखित एवं निर्देशित इस फिल्म में संजय दत्त, नमाशी चक्रवर्ती, समीरा रेड्डी, अमित साध और नीतू चंद्रा जैसे कलाकार दिखाई दिए हैं।

'आखिरी सवाल' कहानी है एक शिष्य विक्की हेगड़े (नमाशी चक्रवर्ती) और उसके गुरू प्रोफेसर गोपाल नाडकर्णी (संजय दत्त) के बीच हुए शास्त्रार्थ की। शिष्य संघ पर लिखी अपनी थिसेस को गुरू द्वारा अस्वीकार किए जाने से नाराज है और वो अपने गुरू को चुनौती देता है कि वो उसके द्वारा पूछे जाने वाले 5 सवालों का जवाब सार्वजनिक रुप से दें। गुरू ये चुनौती स्वीकर करता है और फिर शिष्य संघ पर लगाए जाने वाले 5 आरोपों पर आधारित सवाल पूछता है। कॉलेज कैम्पस से शुरु हुई ये फिल्म टीवी लाइव डिबेट में पहुंच जाती है और इन 5 सवालों के जवाब देते हुए गोपाल नाडकर्णी संघ की सामाजिक और राष्ट्र प्रथम जैसी गतिविधियों के माध्यम से नए भारत के निर्माण में उसके योगदान को स्पष्ट करता है।

फिल्म का उद्देश्य व्यापक है। निर्देशक अभिजीत ने बिना किसी नाटकीयता के फिल्म की कहानी को विस्तार दिया है। संघ के विरुद्ध होने वाले अनेक दुष्प्रचारों के जवाब, चाहे वह गांधी की हत्या का आरोप हो या फिर बाबरी ढांचे को गिराने का, राम मंदिर के लिए कारसेवकों का संघर्ष। क्या संघ का स्वयंसेवक समाजसेवा का चैम्पियन है? क्या संघ अपने स्वयंसेवकों की आहुति देकर समाज में असंतोष फैलाता है? ये कुछ ऐसे आधारभूत सवाल हैं, जिनके जवाब गोपाल नाडकर्णी के माध्यम से दर्शकों तक पहुंचते हैं। म. गांधी के किरदार के माध्यम से संघ प्रमुख डॉ. हेडगेवार के भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका के बारे में बताया गया है।

संजय दत्त अपनी प्रचलित छवि के विपरीत अपनी भूमिका के साथ न्याय करते हुए दिखते हैं। उनके संवाद, उनके किरदार की विशेषता है। नमाशी चक्रवर्ती ने जिज्ञासु युवा का किरदार दमदार ढंग से निभाया है। समीरा रेड्डी के पास वामपंथी प्रोफेसर के किरदार में कुछ विशेष करने के लिए नहीं था, यदि उनके चरित्र का विस्तार हुआ होता तो फिल्म के लिए बेहतर होता। अपनी छोटी सी भूमिका में अमित साध और नीतू चंद्रा ने दर्शकों को प्रभावित किया है। फिल्म में संघ प्रार्थना को एक नए अंदाज में प्रस्तुत किया है जो प्रभावित करता है।

कहा जा सकता है कि 'आखिरी सवाल' संघ के इतिहास के कुछ हिस्सों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। यदि आपकी संघ के प्रति रुचि है तो सुनी-सुनाई बातों पर न जाकर ये फिल्म आपको देखनी चाहिए, संघ के बारे में आपकी समझ और स्पष्ट होगी। हालांकि बिना किसी प्रचार-प्रसार के प्रदर्शित हुई ये फिल्म अधिक दर्शकों तक नहीं पहुंच पाई है। यदि आप चाहते हैं कि आपको संघ का सच पता चले तो ये फिल्म आपके लिए है और समय निकाल कर इसे अवश्य देखें।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

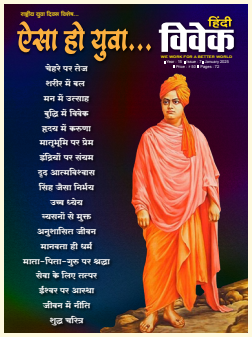

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

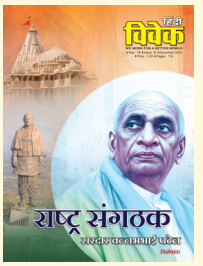

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

युवा पढ़ाई के साथ-साथ अपने करियर को लेकर भी गम्भीर होते हैं। अपने कौशल, रुचि के आधार पर अपने करियर का चयन करना चाहते हैं। इन्हीं में से एक क्षेत्र धरोहरों के रख-रखाव से जुड़ा आकर्षक करियर है। तो चलिए, इसके बारे में जानते हैं।

धरोहरों में टटोलते भविष्य

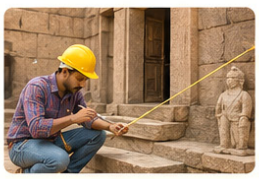

पढ़ाई के साथ-साथ युवाओं की आंखों में अपने सुनहरे भविष्य के सपने तैरते हैं। अपने भविष्य को बनाने के लिए वे हर प्रयास करते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि केवल चिकित्सा व इंजीनियरिंग के क्षेत्र में ही भविष्य उज्जवल हो बल्कि कई ऐसे क्षेत्र हैं, जो युवाओं को सुखद भविष्य दे सकते हैं। जी हां, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों के रख-रखाव भी एक आकर्षक और संतोषजनक करियर है। प्राचीन कलाकृतियों, स्मारकों और कागजातों को संरक्षित कर भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने का काम इस क्षेत्र में किया जाता है। आप सरकारी और गैर-सरकारी, दोनों क्षेत्रों में करियर बना सकते हैं।

म्यूजियम क्यूरेटर: म्यूजियम क्यूरेटर बन कर भी युवा अपना भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। जिनमें ऐतिहासिक वस्तुओं, पांडुलिपियों और कलाकृतियों की पहचान, प्रदर्शन और सुरक्षा का जिम्मा सम्भालना होता है। जो रोचक व आकर्षक होता है।

कंजर्वेटर या रेस्टोरर: कंजर्वेटर या रेस्टोरर के साथ भी भविष्य की शुरूआत की जा सकती है। जो करियर की दृष्टि से आकर्षक माना जाता है। इनका मुख्य काम खराब हो चुकी प्राचीन वस्तुओं, मूर्तियों और चित्रों को वैज्ञानिक तरीकों से उनकी मूल अवस्था में वापस लाना होता है।

हेरिटेज मैनेजर : ऐतिहासिक स्मारकों, महलों या पुरातात्विक स्थलों की देखरेख, पर्यटन प्रबंधन और सुरक्षा का संचालन करना होता है। जो युवाओं को आकर्षक लगेगा, साथ ही साथ इसमें रोमांच का भी अनुभव आएगा।

आर्काइविस्ट: इस क्षेत्र में भी सुनहरे भविष्य की कल्पना युवाओं द्वारा की जा सकती है। जिसके अंतर्गत ऐतिहासिक कागजातों, सरकारी फाइलों और दुर्लभ पुस्तकों का सुरक्षित अभिलेखाकरण करना होता है।

आर्किटेक्चरल कंजर्वेटर: आर्किटेक्चरल कंजर्वेटर का क्षेत्र भी युवाओं द्वारा करियर के रूप में पसंद किया जा रहा है। ऐतिहासिक भवनों या किलों की मरम्मत और मूल ढांचे को हानि पहुंचाए बिना नवीनीकरण करना होता है।

आवश्यक शैक्षणिक योग्यताएं

बैचलर डिग्री: इतिहास, पुरातत्व या ललित कला में डिग्री।

मास्टर डिग्री व डिप्लोमा: म्यूजियोलॉजी, हेरिटेज मैनेजमेंट या कंजर्वेशन में विशेषज्ञता।

स्किल सेट: इतिहास की गहरी समझ, प्राचीन सामग्री की पहचान का ज्ञान और रासायनिक विश्लेषण की आधारभूत जानकारी।

प्रमुख संस्थान (जहां से कोर्स कर सकते हैं) राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली, अहमदाबाद विश्वविद्याल अहमदाबाद, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि कई ऐसे संस्थान हैं, जहां से आप ये कोर्स कर अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

इस ओर भी देखें

मध्य प्रदेश के ब्यावरा में पर्यावरण प्रेमियों ने प्लास्टिक कचरे को नई पहचान दी है। जयपुर-जबलपुर और आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे के बीच बसे इस शहर में बढ़ते प्लास्टिक कचरे की समस्या से निपटने के लिए टीम ने अब तक 200 किलो प्लास्टिक को रीसायकल कर 'इको-ब्रिक्स' बनाई हैं। संस्था के सदस्य खुद सड़कों, घरों और दुकानों से प्लास्टिक और खाली बोतलें इकट्ठा करते हैं। 6 महीने पहले शुरू हुई इस पहल से अब तक 50 लोग जुड़ चुके हैं।

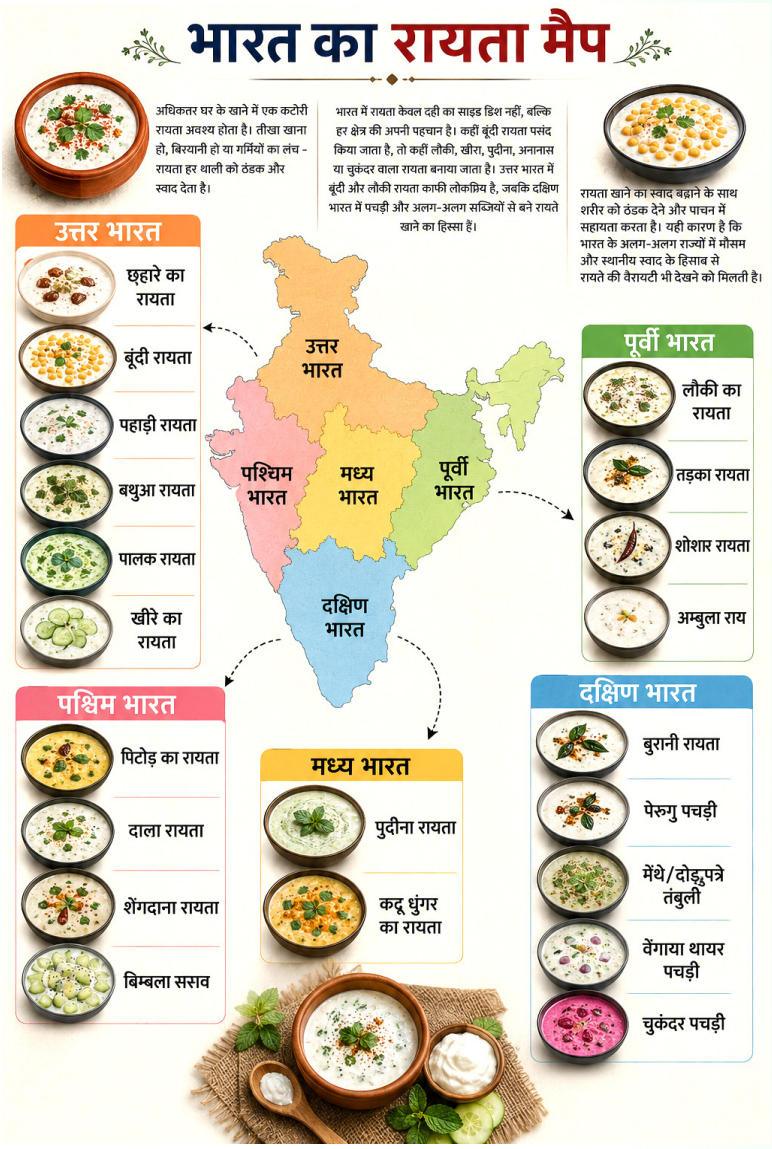

अधिकतर घर के खाने में एक कटोरी रायता अवश्य होता है। तीखा खाना हो, बिरयानी हो या गर्मियों का लंच-रायता हर थाली को ठंडक और स्वाद देता है।

भारत में रायता केवल दही का साइड डिश नहीं,बल्कि हर क्षेत्र की अपनी पहचान है। कहीं बूंदी रायता पसंद किया जाता है तो कहीं लौकी, खीरा, पुदीना, अनानास या चुकंदर वाला रायता बनाया जाता है। उत्तर भारत में बूंदी और लौकी रायता काफी लोकप्रिय है, जबकि दक्षिण भारत में पचड़ी और अलग-अलग सब्जियों से बने रायते खाने का हिस्सा हैं। रायता खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ शरीर को ठंडक देने और पाचन में सहायक होते हैं। यही कारण है कि भारत के अलग-अलग राज्यों में मौसम और स्थानीय स्वाद के हिसाब से रायते की वैरायटी भी देखने को मिलती है।

- **उत्तर भारतः** छुहारे का रायता, बूंदी रायता, पहाड़ी रायता, बथुआ रायता, पालक रायता, खीरे का रायता।
- **पश्चिम भारतः** पिटोड़ का रायता, दाला रायता, शेंगदाना रायता, बिम्बला ससाव।
- **मध्य भारतः** पुदीना रायता, कद्दू धुंगर का रायता।
- **पूर्वी भारतः** लौकी का रायता, तड़का रायता, शोशार रायता, अम्बुला राय।
- **दक्षिण भारतः** बुरानी रायता, पेरुगु पचड़ी, मेंथे/दोड्डुपत्रे तंबुली, वेंगाया थायर पचड़ी, चुकंदर पचड़ी।

ये जड़ी-बूटियां लाल सूची में

मेज़ोट्रोपिस पेलिटा

फ्रिटिलारिया सिरोसा

भारत में कई ऐसी जड़ी-बूटियां हैं जो विलुप्त होने के कगार पर है। जिसको लेकर भारत सरकार संवेदनशील है और इसे बचाने के लिए प्रत्यनशील भी है। तो चलिए इन जड़ी-बूटियों के बारे में आपको अवगत कराते हैं।

हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाने वाली 3 प्रमुख जड़ी-बूटियों को लाल सूची में रखा गया है। जी हां, क्या आपको पता है कुछ ऐसी जड़ी-बूटियां हैं जो विलुप्त होने के कगार पर है, उन्हें लाल सूची में रखा जाता है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय और वन विभाग द्वारा अतिविषा, कुटकी और जटामांसी जैसी कई अन्य महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों को भी विलुप्ति की कगार पर माना गया है। जिसके लिए भारत सरकार ने कड़े कदम उठाए हैं और इनके व्यावसायिक दोहन/निर्यात पर सख्त प्रतिबंध लगाए गए हैं।

मेज़ोट्रोपिस पेलिटा: इसे गम्भीर रूप से संकटग्रस्त माना गया है।

फ्रिटिलारिया सिरोसा: इसे संवेदनशील की श्रेणी में रखा गया है।

डैक्टाइलोरिज़ा हाटागिरिया: यह संकटग्रस्त सूची में शामिल है।

डैक्टाइलोरिज़ा हाटागिरिया

एल्गी ट्री कैसे करता है काम

यह कोई सामान्य पेड़ नहीं बल्कि एक फोटो-बायोरिएक्टर है। इसके भीतर एक कांच के टैंक में विशेष प्रकार के सूक्ष्म शैवाल और पानी भरा होता है। यह मशीन सूर्य के प्रकाश का उपयोग कर प्रकाश संश्लेषण की प्राकृतिक प्रक्रिया को कई गुना तेज गति से दोहराती है। यह हवा से कार्बन डाइऑक्साइड को सोखती है और शुद्ध ऑक्सीजन छोड़ती है। विशेषज्ञों के अनुसार एक एल्गी ट्री अकेले 20 से 25 बड़े पेड़ों के बराबर काम करता है। यह प्रतिवर्ष लगभग 1.5 टन कार्बन डाइऑक्साइड को सोख सकता है। विशेष बात यह है कि यह हवा में मौजूद धूल के सूक्ष्म कणों को भी साफ करता है। घनी जनसंख्या वाले क्षेत्रों में जहां पेड़ लगाने की जगह कम होती है, वहां यह तकनीक वरदान सिद्ध होगी।

सिंहस्थ कुम्भ मेले का 'लोगो' जारी

महाराष्ट्र के नाशिक-त्र्यंबकेश्वर में 2027 में होने वाले सिंहस्थ कुम्भ मेले की तैयारियां जोरों पर हैं। विदित हो कि आगामी 1 अक्टूबर से ध्वजारोहण के साथ कुम्भ का शुभारम्भ होगा, जिसमें 2027 के दौरान मुख्य स्नान तिथियां पड़ेंगी। ज्ञातव्य हो कि यह आयोजन 31 अक्टूबर 2026 से शुरू होकर 24 जुलाई 2028 तक चलेगा। इस दौरान लाखों की संख्या में भक्तगण स्नान करने आएंगे। नाशिक-त्र्यंबकेश्वर में 2027 में होने वाले सिंहस्थ कुम्भ मेले के लिए मुम्बई में आधिकारिक 'लोगो' जारी कर दिया गया है। इसके साथ ही सरकार ने तैयारियों और आधारभूत ढांचे के विकास पर जोर देना शुरू कर दिया है। लोगो (प्रतीक चिह्न) में भगवान शिव का त्रिशूल, त्र्यंबकेश्वर मंदिर, कालाराम मंदिर का मेहराब और गोदावरी नदी को शामिल किया गया है। इसे पुणे के सुमित काटे द्वारा डिजाइन किया गया है। महाराष्ट्र सरकार ने कुम्भ मेले में भाग लेने वाले अखाड़ों के लिए 5 करोड़ रुपए तक के वित्तीय अनुदान की घोषणा की है।

देवगिरी बैंक ने किया अत्याधुनिक इंटरनेट बैंकिंग का शुभारम्भ

छत्रपति सम्भाजीनगर। देवगिरी नागरी सहकारी बैंक ने ग्राहकों को प्रौद्योगिकी आधारित बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से विगत मंगलवार को अत्याधुनिक इंटरनेट बैंकिंग सेवा का शुभारम्भ किया। उक्त बैंक के अध्यक्ष किशोर शितोले ने ग्राहकों से इस तकनीक के लाभ उठाने की अपील की। उन्होंने कहा कि ग्राहक अब डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से अपने घरों पर बैठकर आराम से 24 घंटे वित्तीय लेन-देन सुरक्षित तरीके से कर सकते हैं। नए इंटरनेट बैंकिंग सेवा के अंतर्गत बैलेंस पूछताछ, निधि हस्तांतरण, लोन भुगतान, चेक सेवाओं जैसी सुविधाएं प्रदान करती हैं।

पूर्व सह कार्यवाहिका रुक्मिणी अक्का का स्वर्गवास

राष्ट्र सेविका समिति की पूर्व अखिल भारतीय सह कार्यवाहिका रुक्मिणी अक्का जी का निधन राष्ट्र सेविका समिति और पूरे राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है। अक्का जी ने सह-कार्यवाहिका के रूप में दशकों तक मातृशक्ति को संगठित किया। राष्ट्रभक्ति, कुटुम्ब प्रबोधन और नारी सशक्तिकरण के लिए उनका तपस्वी जीवन हम सबके लिए प्रेरणा है। घर-घर जाकर बहनों को जोड़ना, संस्कार देना और राष्ट्रकार्य के लिए खड़ा करना- यही उनकी साधना थी।

वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर मौसी जी द्वारा 1936 में बोया गया बीज, रुक्मिणी अक्का जी जैसी तपस्वी सेविकाओं के त्याग से ही आज विशाल वटवृक्ष बना है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने भी रुक्मिणी अक्का के देहावसान पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में उन्होंने कहा कि रुक्मिणी अक्का के जाने से भाव विश्व में एक शून्य का निर्माण हो गया है। दोनों शीर्ष संघ पदाधिकारियों ने कहा कि वृद्धावस्था में शरीर का शांत होना स्वाभाविक है, लेकिन दशकों के आत्मीय परिचय और स्नेह के कारण मन को असहनीय वेदना हो रही है। उन्होंने रुक्मिणी अक्का के व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका ज्ञानानुभव से सम्पन्न जीवन राष्ट्र-समर्पित सार्थकता का उज्ज्वल उदाहरण था। रुक्मिणी अक्का राष्ट्र सेविका समिति के माध्यम से हिंदू समाज के संगठन और महिलाओं को संस्कारित करने के उदात्त कार्य में सदैव सक्रिय रहीं। उनकी सहज मातृवत् आत्मीयता एवं निरंतर सक्रियता सभी को प्रभावित करती थी। उनके निधन से सेविकाएं मातृसमान अभिभावक से वंचित हो गई हैं। संघादर्श के मेरुसदृश सूर्यनारायण राव परिवार की उस पीढ़ी की अंतिम कड़ी भी अब इस दुनिया में नहीं रही। डॉ. मोहन भागवत और दत्तात्रेय होसबाले ने कहा, रुक्मिणी अक्का अब स्मृतिशेष हैं। उन्होंने शोकाकुल परिवार एवं समिति की सभी बहनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए ईश्वर से पुण्यात्मा को सद्गति देने की प्रार्थना की है। हिंदी विवेक परिवार की ओर से उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि, ॐ शांति शांति शांति:

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

With low-interest rates and flexible terms, cruise in style while reducing your carbon footprint

Green Car Loan starting at 8.00%* p.a.

*T&C apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : -022-48897204